POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A-I (Hons.), Paper-I

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

(Elements of State) राज्य के तत्व —

विद्वानों द्वारा वर्तमान में राज्य के चार अनिवार्य तत्व माने जाते हैं जो इस प्रकार हैं —

① जनसंख्या :-

जनसंख्या राज्य का एक प्रमुख तत्व माना जाता है। व्यक्तियों से मिलकर ही राज्य का निर्माण होता है। प्लेटो ने आदर्श राज्य का चित्रण करते हुए बताया कि एक आदर्श राज्य में 5,040 नागरिक ही होने चाहिए। अरस्तु का मानना है कि किसी राज्य की जनसंख्या न तो इतनी विशाल हो कि प्रशासनिक समस्या बन जाए और न इतनी कम हो कि लोग शांति व सुरक्षा से न रह सकें। अतः यह कहा जा सकता है कि राज्य में भूखंड एवं संसाधन के अनुरूप जनसंख्या होनी चाहिए।

② निश्चित भू-भाग :-

राज्य का दूसरा तत्व निश्चित भू-भाग अथवा प्रदेश होता है। जब तक जन-समुदाय किसी निश्चित प्रदेश पर निवास नहीं करता तब तक वह राज्य नहीं बन सकता। राज्य

Scanned with CamScanner

राजनीतिक रूप से संगठित मनुष्यों का समुदाय होता है और इन मनुष्यों में शांति एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक निश्चित क्षेत्र का रहना अनिवार्य होता है।

(3) सरकार :-

सरकार भी राज्य का एक आवश्यक तत्व है। सरकार अथवा शासन शांति एवं व्यवस्था की स्थापना करते हैं, कानून व व्यवस्था की रक्षा करते हैं एवं अच्छे जीवन को संभव बनाते हैं। शासन वह तंत्र है, जो अराजकता की स्थिति को समाप्त करता है। सरकार के प्रमुखतया तीन अंग होते हैं – व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका। अलग-अलग देशों में भिन्न-भिन्न प्रकार की शासन प्रणाली पाई जाती है। प्रजातंत्रात्मक सरकार अन्य प्रकार के शासन प्रणाली में श्रेष्ठ मानी जाती है।

(4) सम्प्रभुता :-

सम्प्रभुता को राज्य की आत्मा माना जाता है। सम्प्रभुता से तात्पर्य है कि राज्य आंतरिक रूप से उच्चतम हो यानि अपनी आज्ञा का पालन कराने में सक्षम हो तथा वह बाहरी नियंत्रण से मुक्त हो अर्थात् दूसरे राज्यों के साथ अपनी इच्छानुसार संबंध स्थापित कर सके।

Scanned with CamScanner